प्रकाशन तिथि : 26 नवम्बर 2018, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 37, अंक 5, कुल पृष्ठ 28

ISSN 2454-5163

# वीतराग-विज्ञान

( पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र )

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री सीमन्धरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, वस्त्रापुर, अहमदाबाद (गुज.) का प्रस्तावित चित्र
*(दिनांक 7 से 12 दिसम्बर तक होने वाले पंचकल्याणक के अवसर पर)*

# वीतराग-विज्ञान (424)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

**सम्पादक :**

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**सह-सम्पादक :**

डॉ. संजीवकुमार गोधा

**प्रकाशक एवं मुद्रक :**

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

**सम्पर्क-सूत्र :**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

**शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| आजीवन | : | 251 रुपये |
| वार्षिक | : | 25 रुपये |
| एक प्रति | : | 2 रुपये |

**मुद्रण संख्या :**

| | | |
|---|---|---|
| हिन्दी | : | 7200 |
| मराठी | : | 2000 |
| कन्नड़ | : | 1000 |
| **कुल** | : | **10200** |


## कर्मशक्ति

अहो! अपना सम्यग्दर्शनादि निर्मल कार्य मुझे बाहर से नहीं लाना पड़ेगा; मेरे आत्मा में ही ऐसी शक्ति है कि मैं स्वयं उस कार्यरूप परिणमित हो जाऊँ - ऐसा स्वशक्ति का निर्णय किया वहाँ निजकार्य के लिये बाह्य साधनों की चिन्ता नहीं रहती। इसप्रकार निश्चिंत पुरुषों द्वारा इस आत्मा की साधना होती है; क्योंकि आत्मा को साधने के लिये कोई बाह्य साधन है ही नहीं; अन्तर में आत्मा स्वयं ही सर्व साधन-सम्पन्न है, इसलिये बाह्य साधनों की चिन्ता व्यर्थ है। स्वयं अपने स्वभाव के चिन्तन से ही यह आत्मा सधता है, बाह्य की चिन्ता द्वारा नहीं सधता, इसलिये निश्चिंत पुरुषों द्वारा ही आत्मा सधता है। निमित्तादि बाह्य साधनों की चिन्ता छोड़कर अन्तर्मुख होकर आत्म स्वभाव में एकाग्र होने पर आत्मा स्वयं अपने को साधता है। जिनके चिन्तन में अकेले ज्ञानानन्दमूर्ति आत्मा के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है ऐसे निश्चिंत पुरुषों द्वारा ही भगवान आत्मा साध्य है, वे ही उसका अनुभवन करते हैं। अपनी कर्मशक्ति से ही आत्मा अपने कार्य को साधता है, प्राप्त करता है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 493-494

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।**
**वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 37 (वीर नि. संवत् - 2545) 424 अंक : 5

## राचि रह्यो पर माँहि....

राचि रह्यो पर मांहि तू अपनो रूप न जानै रे।।टेक।।
अविचल चिनमूरत विनमूरत सुखी होत तस ठानै रे।
राचि रह्यो पर मांहि ...।।1।।
तन-धन, भ्रात-तात, सुत-जननी, तू इनको निज जानै रे।
ये पर इनहिं, वियोग-योग में यौं ही सुख-दुख मानै रे।।
राचि रह्यो पर मांहि...।।2।।
चाह न पाये, पाये तृष्णा सेवत ज्ञान जघानै रे।
विपतिखेत विधिबंधहेत पै जान विषय रस खानै रे।।
राचि रह्यो पर मांहि...।।3।।
नर भव जिनश्रुतश्रवण पाय अब कर निज सुहित सयानै रे।
दौलत आतम ज्ञान सुधारस पीवो सुगुरु बखानै रे।।
राचि रह्यो पर मांहि...।।4।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

# श्री सिद्धचक्र मंडल विधान संपन्न

**मुक्तागिरि-बैतूल (म.प्र.) :** महाराष्ट्र-मध्यप्रदेश की सीमा पर सतपुड़ा पर्वतमाला में स्थित दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि पर दिनांक 9 से 15 नवम्बर तक नागपुर पारिवारिक यात्रा संघ तथा नखाते परिवार द्वारा स्व. आदिनाथजी नखाते एवं बंधु श्री विमलनाथजी नखाते की स्मृति में श्री सिद्धक्षेत्र महामंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन रात्रि में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा श्री सिद्धचक्र मंडल विधान की जयमाला के आधार से प्रवचन हुए। उसके पूर्व पंडित संयमजी शास्त्री भोपाल के भी सिद्धचक्र विधान क्या, क्यों, कैसे, कब आदि प्रश्नों के उत्तर देने रूप चर्चात्मक प्रवचन हुए। इसी प्रकार दिल्ली के यात्रासंघ के साथ पधारे पण्डित सुबोधजी 'ज्ञाता' सिवनी एवं पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री का भी एक-एक प्रवचन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जैन 'सरस' के नेतृत्व में संपन्न हुए। इस अवसर पर संस्कार तीर्थ शाश्वतधाम उदयपुर के अध्यक्ष श्री अजितभाई जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती अनिता जैन बडोदरा, श्री शांतिनाथ जैन पुणे की प्रमुख उपस्थिति रही। उन्होंने तन-मन-धन से सहयोग कर मंगल प्रभावना की।

इस आयोजन में मुम्बई, पुणे, नागपुर, अमरावती, परतवाडा, वर्धा, अंजनगाव, अचलपुर, बैतूल, मुलताई आदि स्थानों से अनेक साधर्मीजन उपस्थित हुए। उक्त सात दिवसीय आयोजन में भजनसंध्या, गीतगायन स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा तथा आध्यात्मिक-धार्मिक नाटक महासति चंदनबाला का मंचन सौ. जयश्री नखाते के निर्देशन में किया गया। इसी प्रकार क्रमबद्धपर्याय के सिद्धांत को प्रस्तुत करने वाले महासती मैनासुंदरी नाटक का मंचन नखाते परिवार द्वारा संचालित पाठशाला उच्च प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों द्वारा सौ. भक्ति नखाते के निर्देशन में किया गया। संपूर्ण आयोजन एवं गतिविधियों का संयोजन राजेंद्र नखाते ने किया।

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 30 नव. से 3 दिस. | उदयपुर | वेदी प्रतिष्ठा |
| 7 से 12 दिसम्बर | अहमदाबाद | पंचकल्याणक |
| 19 से 24 दिसम्बर | गौरझामर | पंचकल्याणक |
| 26 दिस.से 1 जन.2019 | जयपुर | विदेशियों हेतु शिविर |
| 16 से 21 जनवरी 2019 | हेरले | पंचकल्याणक |



# सम्पादकीय

## कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

**(गतांक से आगे ...)**

वस्तुत: यह इन्द्रियसुख सुख ही नहीं है। यह तो आकुलतारूप होने से **दु:ख ही है।**

इस गाथा में इसे दु:खरूप सिद्ध करने के लिए पाँच कारण दिए हैं।

**सबसे पहली बात तो यह है कि यह पराधीन है।** यह तो जगत में प्रसिद्ध ही है कि **पराधीन सपनेहु सुख नाहीं –** पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख की प्राप्ति नहीं होती। यह संसारी प्राणी इन्द्रियों के आधीन है। यदि इन्द्रियाँ भोगने के काबिल नहीं हुईं तो प्राप्त भोग्य सामग्री और अधिक संताप देती है। दूसरे भोग्य सामग्री भी तो पर है; अत: उसकी उपलब्धता भी सदा सहज नहीं है।

जब दांत थे, तब चने नहीं मिले और जब चने उपलब्ध हुए, तबतक दांत गायब हो चुके थे। मान लो दांत भी हैं और चना भी हैं, पर भूख ही न हो तो, खाने का भाव ही न हो तो फिर क्या हो ?

इसीप्रकार भोगसामग्री भी हो और भोगने में इन्द्रियाँ भी सबल हों; पर भोगने के भाव बिना भोगा जा सकना संभव नहीं है।

**दूसरी बात इन्द्रियसुख में बाधाएँ भी कम नहीं हैं।** इन्द्रियाँ सबल हों, भोग सामग्री भी हो और भोगने के भाव भी प्रबल हों; पर कोई पूज्य पुरुष आ जाये, मित्र आ जाये या फिर शत्रु ही क्यों न आ जाय; सब **बाधाएँ ही हैं;** क्योंकि उक्त परिस्थिति में उपभोग संभव नहीं है।

**तीसरी बात** यह है कि पुण्योदय से प्राप्त होनेवाले भोग कभी भी विघट सकते हैं; क्योंकि पुण्योदय न जाने कब समाप्त हो जाय। पापोदय

भी तो कभी भी आ सकता है। इसप्रकार ये भोग कभी भी विघटित हो जानेवाले होने से **विच्छिन्न** हैं।

**चौथी बात** यह है कि ये बंध के कारण हैं; क्योंकि भोगने के भाव पापभाव हैं और पापभाव पापबंध के ही कारण होते हैं। इसप्रकार इन्द्रियसुख अभी तो दुखरूप है ही, भविष्य में भी दुख देनेवाला ही है।

**पाँचवीं बात** यह है कि ये विषम हैं, अस्थिर हैं, घटते-बढ़ते रहते हैं।

इसप्रकार यह इन्द्रियसुख सर्वथा त्यागनेयोग्य है; **एकमात्र अतीन्द्रिय आनन्द ही प्राप्त करनेयोग्य है, उपादेय है।**

मूलत: बात यह है कि जबतक इन्द्रियसुख दुखरूप भासित नहीं होगा; तबतक पुण्य में उपादेयबुद्धि बनी ही रहेगी। अत: यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि इन्द्रिय सुख भी दुख ही है तथा **पुण्य भी पाप के समान ही हेय है, त्यागने योग्य है।**

पुराने जमाने में उपभोग की सभी वस्तुओं को छुपाकर रखा जाता था, उनका उपभोग भी एकान्त में होता था; पर आज सबकुछ सामने आ गया है। पहले खाने की सभी सामग्री रसोईघर में रहती थी; पर आज सभी कुछ भोजन की टेबल पर पारदर्शक बर्तनों में सजा रहता है; जो हमें खाने के लिए उत्तेजित करता है। पहले जो थाली में आ गया, खा लिया; पर आज अपने हाथ से उठा-उठाकर सबकुछ लिया जाता है। पुराने जमाने में महिलायें भी पर्दे में रहती थीं, पर आज तो सब कुछ बेपर्दा हो गया है। टी.वी. आदि सभी उत्तेजक सामग्री बेडरूम में आ गई है और सत्साहित्य वहाँ से यह कहकर हटा दिया गया है कि यहाँ इसकी अविनय होगी।

**अरे भाई ! वैराग्यमय चित्र और वैराग्योत्पादक साहित्य घर में रखो, उसे पढ़ते-पढ़ते सोवोगे तो स्वप्न भी सात्विक आयेंगे।**

ये उत्तेजक सामग्री न केवल हमारी वासनाओं को भड़काती हैं, उत्तेजित करती हैं; अपितु हमारी कुत्सित वृत्ति की प्रतीक भी हैं, परिणाम भी हैं। हमारी वृत्ति ही खोटी है; इसीकारण इन भड़काऊ चीजों का प्रवेश



हमारे बेडरूम में हुआ है।

इसप्रकार ये भोग सामग्री हमारी उत्तेजित वासनाओं का परिणाम है और हमारी वासनाओं को भड़काने वाली भी हैं; अत: इन्हें गुप्त रखना ही ठीक है। ये प्रदर्शन की वस्तुएँ नहीं हैं। **ये भोगायतन हैं; इनसे हमारा घर भी भोगायतन ही बनेगा।**

यदि हमें अपने घर को धर्मायतन बनाना है तो वैराग्यपोषक चित्र और सत्साहित्य घर में बसाना चाहिए। न केवल बसाना चाहिए, अपितु उसका अध्ययन भी नित्य करना चाहिए। स्वयं करना चाहिए और घरवालों को भी कराना चाहिए।

**जिस घर में सत्साहित्य नहीं, वह घर घर नहीं, श्मसान है।** यदि अपने घर को श्मशान नहीं बनाना है, **मन्दिर बनाना है तो जिनवाणी को घर में बसाओ, उसका बहिष्कार मत करो, सत्कार करो, स्वाध्याय करो।**

## जो आत्मा का ध्यान करता है

( ९१ )

**सुहअसुहवयणरयणं रायादी भाववारणं किच्चा।**
**अप्पाणं जो झायदि तस्स दु णियमं हवे णियमा॥**

( हरिगीत )

शुभ-अशुभ रचना वचन वा रागादिभाव निवारिके।
जो करें आतम ध्यान नर उनके नियम से नियम है॥

शुभाशुभ वचन रचना और रागादिभावों का निवारण करके जो आत्मा अपने आत्मा को ध्याता है, उसे नियम से नियम (धर्म) होता है।

**तात्पर्य यह है कि शुभाशुभभाव का अभाव कर अपने आत्मा का ध्यान करना ही धर्म है, नियम है।**

**यह गाथा नियमसार नामक शास्त्र के शुद्धनिश्चय प्रायश्चित्त अधिकार की १२०वीं गाथा है।** इसमें यह बताया गया है कि आत्मा का ध्यान करनेवाले के ही नियम (सुनिश्चितरूप) से नियम होता है।

ग्रन्थ के आरम्भ में ही नियम के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए तीसरी गाथा में कहा गया था कि **नियम से करने योग्य जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र हैं, वे ही नियम हैं।**

उक्त गाथा इस कुन्दकुन्द शतक में भी अगली (९२वीं) गाथा के रूप में संकलित है।

यहाँ इस गाथा में कहा जा रहा है कि शुभाशुभवचनरचना का और रागादि भावों का निवारण करके **अपने भगवान आत्मा का ध्यान करना ही नियम है।**

उक्त दोनों बातों में कोई विशेष अन्तर नहीं है; क्योंकि **निज भगवान आत्मा की आराधना का नाम ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है और आत्मा का ध्यान भी तो वीतरागभावरूप है, चारित्ररूप है, चारित्रगुण की पर्याय है, स्वात्मा में ज्ञान की स्थिरतारूप ही है।**

यहाँ प्रायश्चित्ताधिकार होने से ध्यान को ही निश्चयप्रायश्चित्त बताया जा रहा है और नियम की चर्चा भी उक्त संदर्भ में ही है।

अत: जिसप्रकार आत्मध्यान निश्चयप्रायश्चित्त है; उसीप्रकार **निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप नियम भी निश्चयप्रायश्चित्त ही है।**

मुक्ति के मार्ग में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही नियम से करने योग्य कार्य हैं। इसलिए वे ही नियम हैं।

ध्यान भी निश्चय रत्नत्रयवालों के ही होता है और ध्यान भी नियम है। इसप्रकार **ध्यान, निश्चयरत्नत्रय एवं नियम लगभग एकार्थवाची ही है।**

इसलिए मन-वचन-काय की शुभाशुभ वृत्ति और प्रवृत्ति का निवारण करके एकमात्र आत्मा का ध्यान करना ही धर्म है, नियम है।

## नियम से करने योग्य कार्य ही नियम है

( ९२ )

**णियमेण य जं कज्जं तं णियमं णाणदंसणचरित्तं।**
**विवरीयपरिहरत्थं भणिदं खलु सारमिदि वयणं।।**



( हरिगीत )

**सद्-ज्ञान-दर्शन-चरित ही है 'नियम' जानो नियम से।**
**विपरीत का परिहार होता 'सार' इस शुभ वचन से।।**

नियम से करने योग्य जो कार्य हो, उसे नियम कहते हैं। आत्महित की दृष्टि से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ही करने योग्य कार्य हैं; अतः वे ही नियम हैं।

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की निवृत्ति के लिए 'नियम' के साथ 'सार' शब्द जोड़ा गया है।

**अतः सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही नियमसार है।**

**यह गाथा नियमसार नामक शास्त्र की तीसरी गाथा है।** इसमें नियमसार शब्द का तात्पर्य समझाया गया है।

नियम दो प्रकार का होता है -

१. कारण नियम और २. कार्य नियम।

त्रिकालस्वभावरत्नत्रय कारणनियम है और सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्ररूप प्रगट पर्याय कार्यनियम है।

**त्रिकालस्वभावरत्नत्रय को शुद्धज्ञानचेतनापरिणाम भी कहते हैं। इसकारण शुद्धज्ञानचेतनापरिणाम को कारणनियम भी कहते हैं।**

यह शुद्धज्ञानचेतनापरिणाम उत्पादव्ययनिरपेक्ष एकरूप है, द्रव्यरूप है; अत: द्रव्यार्थिकनय का विषय है।

**यह स्वयं मोक्षमार्गरूप नहीं है, यह तो त्रिकाली ध्रुव है, इसके आश्रय से मोक्षमार्ग प्रगट होता है।**

**शुद्धचेतनाज्ञानपरिणाम तो मात्र कारण ही है;** क्योंकि उसके आश्रय से मोक्षमार्ग प्रगट होता है।

इसीप्रकार **मोक्ष केवल कार्य ही है;** किन्तु **रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग कारण भी है और कार्य भी है। मोक्षमार्ग मोक्ष का कारण है और शुद्धज्ञानचेतनापरिणाम का कार्य है।**

कारणनियम भी दो प्रकार का है - १. त्रिकाल एकरूप ध्रुवपरिणाम और २. वर्तमान ध्रुवपरिणाम।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि यहाँ '**सार**' शब्द विपरीतता के परिहार के लिए प्रयुक्त है।

यदि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की बात करें तो इनके विपरीत मिथ्यादर्शन -ज्ञान-चारित्र का परिहार लिया जायेगा; किन्तु **यदि निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप निश्चय मोक्षमार्ग की बात करें तो उसके विपरीत व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप व्यवहार मोक्षमार्ग का परिहार अभीष्ट होगा।**

चूंकि यहाँ निश्चय मोक्षमार्ग की बात चल रही है; अत: यहाँ **व्यवहार मोक्षमार्ग को ही विपरीत मानकर, उसी का परिहार अभीष्ट होना चाहिए।**

इसप्रकार विपरीत में मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणति भी आ गई और व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणति भी आ जाती है। दोनों परिणतियों का परिहार इस सार शब्द से हो जाता है।

इसलिए नियमसार नामक पद का अर्थ मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र तथा व्यवहार सम्यग्दर्शन, व्यवहार सम्यग्ज्ञान और व्यवहार सम्यक्चारित्र से रहित निश्चय सम्यग्दर्शन, निश्चय सम्यग्ज्ञान और निश्चय चारित्ररूप मोक्षमार्ग हुआ। अत: इस **नियमसार नामक शास्त्र में मुख्यरूप से निश्चयरत्नत्रय का ही निरूपण किया गया है।**

## मोक्ष का उपाय मार्ग है

( ९३ )

**मग्गो मग्गफलं ति य दुविहं जिणसासणे समक्खादं।**
**मग्गो मोक्खउवाओ तस्स फलं होइ णिव्वाणं।।**

( हरिगीत )

जैन शासन में कहा है मार्ग एवं मार्गफल।
है मार्ग मोक्ष-उपाय एवं मोक्ष ही है मार्गफल।।



जिनशासन में मार्ग और मार्गफल - ऐसे दो प्रकार कहे गये हैं। उनमें मोक्ष के उपाय को मार्ग कहते हैं और उसका फल निर्वाण (मोक्ष) है। तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकता **मोक्ष का मार्ग है।** तथा इनकी पूर्णता से जो अनन्तसुख, अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन एवं अनन्तवीर्य तथा अव्याबाध आदि गुण प्रगट होते हैं; **वही मोक्ष है।**

यह गाथा नियमसार नामक शास्त्र की दूसरी गाथा है। **इसमें मोक्ष और मोक्षमार्ग का स्वरूप बताया गया है।**

**नियम अर्थात् रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग और सार अर्थात् शुद्धता; शुद्ध रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग ही नियमसार है।**

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों में ही निजपरमात्मतत्त्व का ही अवलम्बन है, किसी पर का अवलम्बन नहीं है। निजपरमात्मतत्त्व के अतिरिक्त किसी भी 'पर' का अवलम्बन शुद्धरत्नत्रय में नहीं होता।

और उस शुद्धरत्नत्रय का फल स्वात्मोपलब्धि (निज शुद्धात्मा की प्राप्ति) है। अपने आत्मा की पूर्ण मुक्तदशा प्रकट होना ही शुद्धात्मा की प्राप्ति है। **मोक्षमार्ग तो निरपेक्ष अपने में है और उसका फल भी अपने में है। अपना आत्मा ही भगवान बन जाय - यही मोक्षमार्ग का फल है।**

इसप्रकार इस गाथा में मात्र यही कहा गया है कि **शुद्धरत्नत्रय मोक्ष का मार्ग है और मुक्ति की प्राप्ति उसका फल है।** (क्रमश:)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - **www.vitragvani.com**
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
**Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com**
ये सभी प्रवचन सामग्री अब **vitragvani** एप पर भी उपलब्ध है।

छहढाला प्रवचन

# मनुष्य भव में मुनिधर्म

**मुनि सकलव्रती बड़भागी, भव-भोगनतैं वैरागी।**
**वैराग्य उपावन माई, चिंते अनुप्रेक्षा भाई।।१।।**
**इन चिन्तत सम सुख जागे, जिमि ज्वलन पवन के लागे।**
**जब ही जिय आतम जाने, तब ही जिय शिवसुख ठाने।।२।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

**(गतांक से आगे....)**

आत्मा स्वयं आनन्दस्वरूप है - ऐसा अनुभव होने पर पुण्य-पाप, राग-द्वेष में एकत्वबुद्धिरूप मिथ्या मान्यता टूट जाती है, अपरिमित राग-द्वेष छूट जाते हैं और अनन्त संसार के कारण का अभाव हो जाता है। ऐसा सम्यग्दृष्टि यद्यपि अभी गृहस्थ है, तथापि मोक्षमार्गी है। जब उसे स्वरूप में और अधिक लीनता होती है, तब उसकी अव्रत संबंधी कषायें भी छूट जाती हैं और पंचमगुणस्थान के योग्य शुद्धि सहित व्रतादि प्रगट हो जाते हैं। यह श्रावक भी बारह भावनायें भाता है तथा स्वरूप में विशेष एकाग्रता होने पर उसे बाह्यपरिग्रह की ममता छूटकर शुद्धोपयोगरूप मुनिदशा प्रकट होती है। वहाँ संज्वलन के अलावा सभी कषायें छूट जाती हैं अर्थात् संसार और भोगों से एकदम उदासीन परिणाम हो जाते हैं, उन्हें प्रचुर वीतरागता होती है। ऐसे मुनिराजों को कषायों के अभावपूर्वक बारह वैराग्य भावनाओं का उत्तम चिन्तन होता है। यह उन्हीं भावनाओं का वर्णन है।

अहो ! जिन्हें मोह नहीं है, आसक्ति नहीं है, कोई बाह्य परिग्रह नहीं है; जो भव-तन भोगों से विरक्त हैं तथा चैतन्य के अतीन्द्रिय आनन्द में



झूलते रहते हैं - ऐसे बड़भागी मुनिवरों के चरणों में इन्द्र और चक्रवर्ती भी भक्ति से नमन करते हैं। ऐसे मुनिराज भी वैराग्य में वृद्धि के लिए बारह भावनायें भाते हैं। यह संसार तो भय से भरा हुआ है, वैराग्य ही अभयदाता है। भय से बचाने के लिए ये भावनायें भव्यजीवों को आनन्ददायक हैं, माता के समान हैं, इनसे समभावरूपी शान्ति प्राप्त होती है, इसलिए इन्हें अवश्य ही भाना चाहिए।

आत्मभानपूर्वक अतीन्द्रिय आनन्द का स्वाद लेनेवाला कोई राजकुमार, अन्त में वैराग्य बढ़ने पर माता के पास जाकर दीक्षा लेने की आज्ञा माँगता हुआ कहता है कि हे माता ! मुझे आज्ञा दो कि मैं मुनि होकर स्वरूप की साधना करूँ और केवलज्ञान प्राप्त करके इस संसार-समुद्र से छूटूँ। इसप्रकार जो संसार से उदास होकर बाहर भावनाओं को भाते हुए मुनि होता है तथा शुद्धस्वरूप के ध्यान में एकाग्र होता है, उसे अतीन्द्रिय आनन्द का दरिया उछलता है। वाह ! धन्य है वह वैराग्य और धन्य है वह मुनिदशा।

उपसर्ग और परीषह के समय भी इन भावनाओं के चिन्तन से वैराग्य में वृद्धि होती है, मार्ग में दृढ़ता होती है तथा समताभावरूप सुख उत्पन्न होता है। जहाँ वैराग्य है, वहीं सुख का समुद्र उछलता है। धर्मी जीव ने अपने स्वभाव के सुख का स्वाद चखा है और रागादि परभावों को दु:खरूप जाना है अर्थात् उसकी परिणति रागादि कषायों से विरक्त हो गई है। बारह भावनाओं द्वारा स्वरूप का चिन्तन करने से उसे वीतरागी समतारूप सुख की धारा उल्लिसित होती है।

जो जीव आत्मस्वभाव को जानता है, वही जीव वैराग्य भावनाओं द्वारा मोक्ष सुख को साधता है। अशुभ हो या शुभ सभी राग दु:खरूप हैं, सुख तो मेरे चैतन्यस्वभाव की भावना में है। चैतन्यतत्त्व के अलावा दूसरा कोई भी मेरा नहीं है, चैतन्य के अनुभव में ही सुख की उत्पत्ति होती है

– ऐसी भावना द्वारा धर्मी जीव के अन्तर में शान्तरस की अमृतधारा बहती है। जिसप्रकार हवा लगने पर अग्नि भभक उठती है, उसीप्रकार वैराग्य भावना द्वारा चैतन्य की शान्ति उल्लसित हो जाती है। इसप्रकार ज्ञान सहित वैराग्य भावनाएँ सुख की जननी हैं।

इन बारह भावनाओं में चेतना के सन्मुख होने की बात है। अज्ञानी को सच्ची भावनाएँ नहीं होतीं। जो पर से भिन्न आत्मा को नहीं जानता वह किसकी भावना करेगा ? वैराग्य भावना भी आत्मा के आधार से होती है। आत्मा की सन्मुखता बिना होने वाले मात्र शुभ विकल्पों की मोक्षमार्ग में कोई कीमत नहीं है, वे सब बंध के ही कारण हैं।

'वैराग्य' शब्द नास्ति सूचक है। अपने ज्ञानमय अस्तिस्वभाव को जानकर उसमें एकाग्र होने पर राग की नास्तिरूप सच्चा वैराग्य होता है। ज्ञान-आनन्द आदि अनन्त गुणों से भरपूर आत्मा में एकाग्र होने पर ही पर भावों से वैराग्य होता है और सुख का अनुभव होता है। इस वैराग्य की उग्रता होते-होते केवलज्ञान और मोक्षसुख प्रगट होता है, इसलिए मुमुक्षुओं को बारम्बार भेदज्ञानपूर्वक वैराग्य भावना भानी चाहिए।

धर्मीजीव को भेद-ज्ञान होने पर चैतन्य रस का अपूर्व स्वाद आता है, उसे लगन लगती है – ऐसी खुमारी चढती है कि वह बारम्बार अन्तर में एकाग्र होकर उसकी भावना करता है, उपयोग को बारम्बार चैतन्य के चिन्तन में जोड़ता है। अरे जीव ! तू अपनी वस्तु का चिन्तन छोड़कर पर की चिन्ता करता है, उसमें तो दुख और आकुलता ही है। पर का संबंध छोड़कर चैतन्य में उपयोग जोड़ने पर वीतरागी समता रूप महान सुख होता है, इसलिए ये बारह भावनाएँ अवश्य भानी चाहिए। **(क्रमशः)**

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**



**नियमसार प्रवचन –**

## आचार में स्थिरता वाला प्रतिक्रमणमय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ८६ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलतः इसप्रकार हैं –

**उम्मग्गं परिचत्ता जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभावं।**
**सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८६।।**

( हरिगीत )

**छोड़कर उन्मार्ग जो जिनमार्ग में थिरता धरे।**
**प्रतिक्रमणमय है इसलिए प्रतिक्रमण कहते हैं उसे।।८६।।**

जो जीव उन्मार्ग को छोड़कर जिनमार्ग में स्थिरभाव करता है, वह जीव ही प्रतिक्रमण कहा जाता है; क्योंकि वह प्रतिक्रमणमय है।

**(गतांक से आगे....)**

**धर्मी जीव शंका, कांक्षा, विचिकित्सा तथा अन्यमत की प्रशंसारहित होता है।**

यहाँ उन्मार्ग का त्याग और सर्वज्ञ वीतरागमार्ग को स्वीकार करने का वर्णन किया है। इस जगत में छह द्रव्य हैं, वे सब स्वतंत्र हैं; इसप्रकार जैसा है, वैसा जो कहते नहीं; वे सब उन्मार्गी हैं अर्थात् वीतराग-सर्वज्ञकथित मार्ग के अतिरिक्त सब मार्ग उन्मार्ग हैं। उन उन्मार्गों को त्याग कर जो सर्वज्ञ के कहे हुए आत्मा के स्वरूप में ठहरते हैं, वे प्रतिक्रमणस्वरूप हैं।

धर्मी जीव कैसा होता है? वह कहते हैं :-

**(१) शंकारहित होता है –** छह द्रव्य और नव तत्त्व में धर्मी जीव को शंका नहीं होती। अन्यमत का कोई वैरागी जीव देखने में आवे तो यह वैरागी भी शायद सच्चा होगा – ऐसी शंका नहीं होती।

**(२) कांक्षारहित होता है –** परमत की इच्छा नहीं, किसी परमत को अच्छा मानकर उसकी इच्छा नहीं होती; उसीप्रकार पुण्य-पाप के फल और देवपद की इच्छा भी नहीं होती। अनन्त आत्मायें, अनन्तानन्त पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और असंख्य कालाणु – ये छहद्रव्य सर्वज्ञ के अतिरिक्त अन्य किसी ने नहीं बताए हैं। प्रत्येक द्रव्य शक्तिमान प्रभु है। आत्मा ज्ञाता-दृष्टास्वरूप है, यह चेतनेश्वर है; जड़ में अनन्तशक्ति है, वह जड़ेश्वर है;कोई किसी की ईश्वरता लूटता नहीं है, तथापि पर को पराधीन मानना – इसप्रकार विभाव को माननेवाला और चैतन्य को नहीं माननेवाला विभावेश्वर है। इसतरह तीन प्रकार के ईश्वर का स्वरूप पंचास्तिकाय में है। इसप्रकार जैसा है, वैसा धर्मी मानता है और परमत की कांक्षा नहीं करता।

**(३) विचिकित्सारहित होता है –** अपना स्वभाव शीघ्र क्यों प्रकट नहीं होता, इसप्रकार धर्मी अपने स्वभाव की ग्लानि नहीं करता और मुनि के नग्न व मलिन शरीर को देखकर भी ग्लानि नहीं करता।

**(४) अन्यदृष्टि प्रशंसारहित होता है –** निमित्त से कार्य होता है अथवा व्यवहार से धर्म होता है, इसप्रकार मानने वाला अन्यमती है। धर्मी जीव उनकी प्रशंसा नहीं करता। इसप्रकार धर्मी जीव शंका इत्यादि दोषों से रहित होता है।

**वस्तुस्वरूप से विपरीत मान्यतावाले मिथ्यादृष्टि जीव की प्रशंसा धर्मी जीव मन से अथवा वचन से नहीं करता।**

सम्यग्दर्शनसहित स्थिरता करनेवाले मुनि को प्रतिक्रमण होता है। मुनिपना प्रकट होने से पहले चौथे गुणस्थान में निश्चयसम्यग्दृष्टि कैसा होता है, वह कहते हैं :-

(१) धर्मी जीव संसार में होने पर भी 'अपना स्वभाव ज्ञान और आनन्दमय है' – इस मान्यता में शंकित नहीं होता। 'देह-मन-वाणी मैं नहीं, मैं तो शुद्ध चैतन्यस्वभावी हूँ' – इसमें शंका नहीं होती। **(क्रमशः)**



**समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन**

# चिति शक्ति

**आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।**

**(गतांक से आगे....)**

अहो! सैंतालीस शक्तियाँ बताकर आचार्यदेव ने गजब का काम किया है। सत् को उजागर कर दिया है। श्रीमद्राजचन्द्रजी ने कहा है कि – यद्यपि **सत् सरल है, सत् सर्वत्र है; परन्तु सत् मिलना दुर्लभ है।**

इस अजड़त्वस्वरूप चितिशक्ति में अकार्यकारणत्व शक्ति का रूप है। इस ज्ञानमात्र भाव में चितिशक्ति उछलती है, तब उसके परिणमनरूप निर्मल ज्ञान-दर्शन की एकरूप पर्याय प्रगट होती है। **चितिशक्ति का परिणाम राग का कारण भी नहीं है और राग का कार्य भी नहीं है।**

अहा! त्रिकाली एक ज्ञानमात्रभाव में चितिशक्ति भरी हुई है – इसप्रकार शक्ति और शक्तिवान की भी भेददृष्टि छोड़कर अखण्ड एक ज्ञानमात्रस्वरूप की दृष्टि करते ही चितिशक्ति पर्याय में प्रगट हो जाती है। **भेद, व्यवहार या राग से चितिशक्ति में निर्मलता प्रगट नहीं होती; क्योंकि राग तो अंधा है, इससे चेतनता कहाँ से प्रगट होगी?**

**ज्ञान-दर्शन की निर्मलदशा की उत्पत्ति में द्रव्य-गुण को कारण कहना व्यवहार है। वास्तव में जो परिणमन हुआ है, उसका कारण-कार्य उस परिणमन में ही है। द्रव्य-गुण भी उसके कारण नहीं हैं।**

कलश टीका में कहा है कि जो पर्यायरूप परिणाम-कार्य होता है,

उसमें द्रव्य-गुण-उपचारमात्र कारण है, जो निर्मलपर्याय का अनुभव प्रगट हुआ वह कार्य है और द्रव्य-गुण उसका कारण है - यह उपचार कथन है। परवस्तु तथा परभाव में तो व्यवहार में भी कारण-कार्य सम्बन्ध नहीं है।

**चितिशक्ति का कार्य शुद्धज्ञानचेतनारूप परिणमना है, विकाररूप/कर्मचेतनारूप परिणमना नहीं। 'ये गुण हैं तथा यह गुणी हैं' - इसप्रकार की भेदबुद्धि को छोड़कर अभेद एक चिन्मात्र आत्मा की दृष्टि करने से जो ज्ञानचेतना अर्थात् ज्ञान-दर्शनरूप परिणाम प्रगट होता है, वही चितिशक्ति का कार्य है।** इस परिणाम का कारण कोई परद्रव्य नहीं है। तात्पर्य यह है कि **'भगवान की वाणी सुनी' इसलिए सम्यग्ज्ञान पर्याय प्रगट हुई - ऐसा नहीं है।**

**प्रश्न** - पहले तो ज्ञान नहीं था, फिर भगवान की वाणी सुनी तो ज्ञान हुआ। तब फिर सुनने से ही ज्ञान प्रगट हुआ कहलाया न?

**उत्तर** - नहीं, ऐसा नहीं है। ज्ञान की पर्याय स्वयं से प्रगट होती है, **वाणी से नहीं। वाणी का सुनना निमित्त अवश्य है; परन्तु निमित्त के कारण ज्ञान प्रगट नहीं हुआ। ज्ञान निमित्त का कार्य नहीं है। जो ज्ञान निमित्त के लक्ष्य से उत्पन्न होता है, वह परलक्षी होता है, वह यथार्थज्ञान/सम्यग्ज्ञान नहीं है। द्रव्यस्वभाव की अन्तर्दृष्टिपूर्वक जो ज्ञान होता है, वही वास्तविक/सत्यार्थ ज्ञान है।**

**अरे भाई! जो चेतना अपने में नहीं चेते, अपने को नहीं जाने, उसे चेतना कौन कहे? यह तो जड़पना हुआ। जो अपने में चेते, अपने को जाने वही पर को यथार्थ जान सकता है।** यही चितिशक्ति का कार्य है।

**(क्रमशः)**



# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** अभव्यजीव को केवलज्ञान का आवरण करनेवाला केवलज्ञानावरण कर्म है या नहीं ?

**उत्तर :** है, अभव्य को भी शक्ति अपेक्षा से केवलज्ञान है अर्थात् उसके भी केवलज्ञान होने की शक्ति विद्यमान है; अत: केवलज्ञानावरण कर्म होता है।

**प्रश्न :** प्रवचन तो वर्षों से सुनते आ रहे हैं, अब तो अन्दर जाने का कोई संक्षिप्त मार्ग बताइये ? जीवन अल्प रह गया है।

**उत्तर :** आत्मा अकेला ज्ञानस्वभाव चिद्घन है, अभेद है, उसकी दृष्टि करो। भेद के ऊपर लक्ष करने से रागी जीव को राग उत्पन्न होता है, इसलिये भेद का लक्ष छोड़कर अभेद की दृष्टि करो - यही संक्षिप्त सार है।

**प्रश्न :** राग को सुख का साधन माननेवाला क्या भूल करता है ?

**उत्तर :** जिसने राग को सुख का साधन माना, उसकी मान्यता में यह बात बैठ गई कि जहाँ राग नहीं होगा, वहाँ सुख भी नहीं होगा। राग के बिना अतीन्द्रिय सुख होता है - यह बात उसकी श्रद्धा में नहीं आई और जहाँ अतीन्द्रिय सुख की श्रद्धा भी न हो, वहाँ उसका उपाय भी कैसे बन सकेगा ? राग के एक विकल्प को भी जो जीव सुख का या ज्ञान का साधन मानता है, वह जीव इन्द्रिय विषयों में ही सुख मानता है और आत्मा के 'स्वयंभू' सुखस्वभाव को नहीं मानता।

**प्रश्न :** यह सब कुछ जानने में आता है, फिर भी आत्मा जानने में क्यों नहीं आता ?

**उत्तर :** यह सब ज्ञात हो रहा है, उसका ज्ञाता कौन है ? जिस सत्ता में यह सब जानने में आ रहा है, उसका जाननेवाला जानने में नहीं आता - यही भ्रम है। यह शरीर है, मकान है, धन है, स्त्री-पुत्रादि हैं - ऐसा जो जानने में आता है, वह किसमें ज्ञात होता है ? यह सब जाननेवाले की सत्ता में ज्ञात होता है। जाननेवाले की सत्ता की मुख्यता में यह सब ज्ञात होता है। इस जाननेवाले को जाने नहीं, माने नहीं; यह

भ्रम ही चौरासी के अवतार में भटकने का कारण है। शरीरादि तो इस जाननेवाले से भिन्न वस्तु हैं, उससे भिन्न रहकर जाननेवाला अपनी सत्ता में खड़ा रहकर जानता है। इस जाननेवाले को जाने और माने तो भवभ्रमण से छुटकारा मिल सकता है।

**प्रश्न :** अज्ञानी पुरुष का संसार क्या है और आत्मज्ञान शून्य विद्वान का संसार क्या है ?

**उत्तर :** जो पुरुष अज्ञानी है अर्थात् हिताहित को नहीं जानता है, उसका संसार तो स्त्री-पुत्रादि ही हैं। परन्तु जो विद्वान है, शास्त्रों का अक्षराभ्यास भी विशदरूपेण कर चुका है, अनेकों श्लोक-गाथायें अपने स्मृति-पटल पर अंकित कर चुका है; किन्तु आत्मज्ञान से शून्य है, उसका संसार शास्त्र ही हैं।

**प्रश्न :** अनन्तानुबंधी लोभ किसे कहते हैं ?

**उत्तर :** अपनी स्वभावपर्याय (सम्यग्दर्शनादि) प्रगट करूँ, तभी वास्तविक संतोष है - ऐसा न मानकर अज्ञानी जीव अशुभ से शुभ में आकर उसी में सन्तुष्ट हो जाये तो ऐसे जीव को वास्तव में राग का लोभ है और इसी को अनन्तानुबंधी लोभ कहते हैं।

**प्रश्न :** मिथ्यादृष्टि के ज्ञान में द्रव्यस्वभाव भासित नहीं होता तो क्या उसे द्रव्य का अभाव है ?

**उत्तर :** मिथ्यादृष्टि को द्रव्य भासित नहीं होता, इसलिए उसके ज्ञान में द्रव्य अभावरूप है। ज्ञानी को तो पर का द्रव्य भी भासित होता है, इसलिये अज्ञानी के द्रव्य को ज्ञानी भगवानस्वरूप देखता है। किन्तु अज्ञानी को तो द्रव्य दिखाई ही नहीं पड़ता; अत: उसकी दृष्टि में तो द्रव्य अभावरूप ही है।

**प्रश्न :** अज्ञानी जीव को मोक्ष की श्रद्धा है या नहीं ?

**उत्तर :** मोक्ष की श्रद्धा अज्ञानी को नहीं है; क्योंकि शुद्धज्ञानमय आत्मा को वह जानता नहीं; इसलिये उसे मोक्ष की भी श्रद्धा नहीं और मोक्ष की श्रद्धा हुए बिना वह चाहे जितने भी शास्त्र पढ़ ले; तथापि आत्मा का लाभ नहीं हो सकता। शास्त्रों का हेतु तो शुद्धज्ञानमय आत्मा दर्शाकर मोक्ष के उपाय में उद्यमवन्त करना है; परन्तु जिसे मोक्ष की श्रद्धा ही नहीं, उसे शास्त्र पढ़ना कैसे गुणकारी होगा ? ग्यारह अंग पढ़ने पर भी अभव्य अज्ञानी ही रहता है।



## समाचार दर्शन -

**अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित -**

# ऐतिहासिक रही तमिलनाडु तीर्थयात्रा

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित वीतराग विज्ञान यात्रा संघ की तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा दिनांक 16 से 21 अक्टूबर, 2018 तक अनेक विशिष्ट उपलब्धियों सहित ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुई। इस यात्रा में देशभर के अनेक शहरों से 308 यात्री सम्मिलित हुये। यात्रा का विधिवत् उद्घाटन दिनांक 17 अक्टूबर को पौन्नूरमलै में किया गया। उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर उपस्थित थे।

सर्वप्रथम फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने स्वागत भाषण में यात्रा के उद्देश्यों एवं विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सभी समागत यात्रा बन्धुओं का स्वागत किया।

इस अवसर पर संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रा की संक्षिप्त रूपरेखा बताई तथा यात्रियों को दी जाने वाली आकर्षक किट व उसमें रखी सामग्री की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। तीर्थयात्रियों के लिये उपयोगी सामग्री सहित तैयार की गई विशेष यात्रा किट का विमोचन श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा मुम्बई ने किया। बस लीडर्स का बैच लगाकर स्वागत मंचासीन अतिथियों के साथ संघपति ने किया। संघपति परिवार (श्री प्रकाशचंदजी सेठी, श्रीमती शशि सेठी) का जैकेट, अंगरखा, शॉल, साफा पहनाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् संघपति श्री प्रकाशचंदजी सेठी परिवार, डॉ. भारिल्ल एवं गणमान्य अतिथियों ने हरिझण्डी दिखाकर यात्रा की शुरुआत की।

कार्यक्रम का संचालन पीयूषजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

छ: दिवसीय इस ऐतिहासिक यात्रा में तमिलनाडु के प्रमुख जैन तीर्थों एवं प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन किये गये, जिसमें पौन्नूरमलै, करन्दै, वेनकुण्ड्रम धवलतीर्थ, जिंजी पर्वत, तिरुमलै अरिहंतगिरि, जिनकांची, सलुक्कै, थिरकोइल, विलुक्कम, वंगारम, तिरुप्पनपमूर, थिरूपरुत्तिकुण्ड्रम, तिरुनरुकुण्ड्रम पर्वत, कोलियानूर आदि तीर्थों पर जिनेन्द्र-पूजन, भक्ति, प्रवचन आदि का आयोजन किया गया।

सम्पूर्ण तीर्थयात्रा के दौरान सभी यात्रियों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा आत्मानुभूति का उपाय एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा कलिकाल सर्वज्ञ 'आचार्य कुन्दकुन्ददेव की महिमा एवं उनका जीवन परिचय'

विषय पर प्रवचन रहे।

यात्रा संघ का अरिहंतगिरि व मेलचित्तामूर में विशेषरूप से स्वागत किया गया, इसके अतिरिक्त स्नातक परिषद् तमिलनाडु प्रान्त द्वारा भी यात्रा संघ का हार्दिक स्वागत किया गया। जिनकांची मठ के भट्टारकजी ने दादा का सम्मान किया। मेलचित्तामूर के भट्टारकजी ने दादा का सम्मान करते हुए कहा कि टोडरमल स्मारक में अध्ययन कर आये हुए स्नातकों के कारण ही तमिलनाडु प्रान्त में तत्त्वप्रचार का कार्य चल रहा है। इसके अतिरिक्त उन्होंने टोडरमल महाविद्यालय जैसा विद्यालय प्रारम्भ होने पर भूमि देने की भावना व्यक्त की।

यात्रा संघ की टीम ने यात्रियों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए आरामदायक यात्रा हेतु 2 x 2 पुश बैक मर्सिडीज बेन्ज की ए.सी. लग्जरी बसों, गुजराती/उत्तर भारतीय स्वादानुसार स्वादिष्ट भोजन एवं अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था की। 6 दिनों में 8 बसों एवं 6 कारों के माध्यम से कुल 308 यात्रियों के समूह लगभग 1200 कि.मी. की दूरी तय करते हुए कुल 17 तीर्थक्षेत्रों की भक्तिभावपूर्वक वंदना की।

दिनांक 21 अक्टूबर को कोलियनूर में आयोजित समापन समारोह के अवसर पर डॉ. भारिल्ल आदि सभी विद्वत्गण एवं विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे।

सर्वप्रथम फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रा के दौरान तैयार की गई तमिलनाडु प्रान्त में तत्त्वप्रचार की दीर्घकालीन व्यापक योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए समागत यात्रियों द्वारा तदर्थ प्राप्त दानराशियों की घोषणा की, जिसका सभी लोगों ने हर्षध्वनि द्वारा स्वागत किया। उन्होंने यात्रा के सफल प्रबंधन के लिये सभी व्यवस्थापकों और कार्यकर्त्ताओं तथा सहयोग के लिये सभी समागत यात्रियों का आभार व्यक्त किया।

इस यात्रा के सफल आयोजन में मुमुक्षु मण्डल चेन्नई एवं कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट का उल्लेखनीय योगदान रहा, एतदर्थ उनका विशेष रूप से आभार व्यक्त किया गया।

समारोह में श्री अनिलजी जैन (I.P.S.) जयपुर, श्री पी.सी.सेठी जयपुर, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री मणिलालजी मुम्बई, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री उल्लासभाई मुम्बई, श्री गौरवजी जैन जयपुर, आदि अनेक तीर्थयात्रियों ने अपने हृदयोद्गार सुनाये, जिससे सारी सभा गद्गद् हो उठी। तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन हुआ।

यात्रा संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी यात्रियों, बस लीडरों, तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं, इवेन्ट ऑर्गनाइजर श्री विजय नवलखा एवं यात्रा को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-परोक्षरूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का कृतज्ञता ज्ञापन किया तो सारी सभा भावविभोर हो उठी। संचालन पीयूषजी शास्त्री, जयपुर ने किया। ●



# महावीर निर्वाणोत्सव संपन्न

**(1) जयपुर (राज.) :** यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 नवम्बर को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: नित्य-नियम पूजन के उपरान्त पंचतीर्थ जिनालय में एवं सीमंधर जिनालय में निर्वाण श्रीफल समर्पित किया गया। तत्पश्चात् पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा '**भगवान महावीर के सिद्धांत**' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। साथ ही गुरुदेवश्री का मांगलिक प्रवचन एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का दीपावली विषय पर वीडियो प्रवचन भी आयोजित हुआ। सभी कार्यक्रम पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये।

**(2) देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में दिनांक 4 से 8 नवम्बर तक महावीर निर्वाणोत्सव, नियमसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा अलग-अलग विषयों पर व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। पूजन-विधान का कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल व पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 800 साधर्मियों ने लाभ लिया।

**(3) मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) :** यहाँ श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 10 नवम्बर तक भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन के पश्चात् पण्डित विमलदादा झांझरी द्वारा नियमसार, ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा 'मेरा सहज जीवन' एवं डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा पाँच लब्धि, पंच परावर्तन व तीन लोक पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में मंगलार्थी स्वाध्याय, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित अजितजी अचल एवं डॉ. जयंतीलालजी द्वारा व्याख्यान हुए। तत्पश्चात् पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर कक्षा का लाभ मिला। प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा पाँच भावों पर ली गई। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, व्याख्यानमाला के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अरिहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित नगेशजी जैन पिड़ावा, पण्डित संजीवजी जैन दिल्ली, पण्डित अशोकजी

लुहाड़िया, पण्डित सचिनजी जैन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

दिनांक 7 नवम्बर को कृत्रिम कैलाश पर्वत पर कृत्रिम पावापुरी की रचना बनाकर श्रीफल चढाकर भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक मनाया गया, जिसमें पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा निर्वाण का अद्भुत दृश्य दिखाया गया।

शिविर में 170 तीर्थंकर मंडल विधान का आयोजन हुआ। शिविर एवं विधि-विधान का समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री एवं संयोजन पण्डित सुधीरजी शास्त्री ने किया।

**(4) दिल्ली :** यहाँ न्यू उस्मानपुर नगर के श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में दिनांक 5 नवम्बर को '**वीर निर्वाणोत्सव**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली (जैनदर्शन विभागाध्यक्ष-लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली) ने की। इस अवसर पर ऋषभजी शास्त्री, अमनजी शास्त्री, शुभमजी शास्त्री, सन्देशजी जैन, तुषारजी जैन, संयमजी जैन, हिमांशुजी जैन, आत्मार्थी श्रुति जैन, आयुषी जैन, शाश्वत साक्षी जैन द्वारा अपना वक्तव्य दिया गया। गोष्ठी का निर्देशन पण्डित ऋषभजी शास्त्री ने एवं संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री ने किया।

**(5) खड़ैरी (म.प्र.) :** यहाँ दीपावली के अवसर पर श्री टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद् के निर्देशन में महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा '**चारित्तं खलु धम्मो**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अंकित जैन, अभय जैन, चेतन जैन, अंकुर जैन, अनुज जैन, अरविन्द जैन, एकांश जैन, कु. खुशबू जैन, कु. प्रज्ञा जैन, कु. शिवानी जैन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। निर्णायक के रूप में पण्डित विमोशजी शास्त्री व पण्डित संजीवजी शास्त्री उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त पण्डित सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी द्वारा प्रात: नियमसार एवं रात्रि में कथाओं के माध्यम से स्वाध्याय का लाभ मिला।

दीपावली के दिन प्रात: प्रभातफेरी व निर्वाण श्रीफल का कार्यक्रम हुआ। रात्रि में '**दीवान अमरचंद : एक असाधारण व्यक्तित्व**' नामक नाटक का मंचन पाठशाला के बच्चों द्वारा किया गया, जिसका निर्देशन मंगलार्थी विपिन जैन व कु. वर्षा जैन ने किया।

बाह्यक्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने-बिगड़ने का विचार नहीं है। और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें उन्हीं पर दृष्टि रहती है, परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है उसका विचार नहीं करते। और फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है उसका लगता है।... **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 238**



# समाधि दिवस मनाया

**जयपुर (राज.) :** यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के समाधि दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 13 नवम्बर को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील उपस्थित थे। मंचासीन अतिथियों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री अरुणकुमारजी कासलीवाल, श्रीमती कमला भारिल्ल उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सहज जैन पिड़ावा ने किया। तत्पश्चात् शास्त्री प्रथम से पवित्र जैन, संयम जैन व प्रियांश जैन ने, शास्त्री द्वितीय वर्ष से सम्मेद खोत एवं शास्त्री तृतीय वर्ष से कु. श्रुति जैन व अमन जैन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। साथ ही स्वप्निल जैन, अर्पित जैन व समर्थ जैन ने कविता के माध्यम से टोडरमलजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि टोडरमलजी का आध्यात्मिक क्षेत्र में योगदान तो अभूतपूर्व है ही, साथ ही साथ हिन्दी साहित्य के गद्य विधा को उन्होंने ऊँचाई पर पहुंचाया है, जिसे परवर्ती हिन्दी विद्वानों ने सम्मानपूर्वक स्मरण किया है तथा अधिकाधिक लोगों तक जिनवाणी को पहुंचाने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी रचनाएं ब्रज भाषा में बनाई।

संचालन सोमिल जैन दलपतपुर ने एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।


## डॉ. भारिल्ल के नवीन प्रकाशन

**समयसार विधान** (मूल्य - 35, पृष्ठ-240)
**नियमसार विधान** (मूल्य - 25, पृष्ठ-232)
**प्रवचनसार विधान** (मूल्य - 20, पृष्ठ-112)
**अष्टपाहुड विधान** (मूल्य - 25, पृष्ठ-182)
**चौबीस तीर्थंकर विधान** (मूल्य - 5, पृष्ठ-32)
**योगसार विधान** (मूल्य - 8, पृष्ठ-56)

**छपकर तैयार है।**

**-: संपर्क सूत्र :-**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15
फोन-0141-2705581, 2707458; E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

**श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –**

## साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 28 अक्टूबर को '**अनेकान्त एवं स्याद्वाद**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सोमिल जैन दलपतपुर (शास्त्री तृतीय वर्ष), अतिशय जैन चौरई (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं सिद्धार्थ जैन लुकवासा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अरविन्द जैन खड़ैरी (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नयन जैन बरायठा व श्रेणिक जैन ने किया। ग्रंथ भेंट एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 18 नवम्बर को '**जिनागम के आलोक में क्रमबद्धपर्याय**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री संजयजी सेठी, जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पीयूष जैन टडा (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं आयुष जैन पिपरिया (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सिद्धार्थ जैन ग्वालियर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के शाश्वत जैन बड़ामलहरा व सन्मति जैन कर्रापुर ने किया। ग्रंथ भेंट एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

## आदर्श यात्री पुरस्कार

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा संचालित श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ द्वारा आयोजित चतुर्थ तीर्थयात्रा (तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्र) के अन्तर्गत प्रत्येक बस से एक आदर्श यात्री का चयन किया गया, जिसके अन्तर्गत बस नं.1 से श्री महेन्द्र गोधा जयपुर, बस नं. 2 से देशना जैन दिल्ली, बस नं. 3 से गौरव जैन जयपुर, बस नं. 4 से दिपाली जैन जयपुर, बस नं. 5 से वैशाली जैन अहमदाबाद, बस नं. 6 से श्वेता जैन कोलकाता, बस नं. 7 से प्रदीप जैन, बस नं. 8 से अमित जैन कोलकाता आदर्श यात्री रहे।

## विशेष प्रोजेक्ट

टोडरमल महाविद्यालय के शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार के सम्यग्दर्शन अधिकार पर आधारित विशेष प्रोजेक्ट जिनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में तैयार कर प्रदर्शनी लगायी गयी। इसका उद्घाटन दिनांक 13 नवम्बर को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री अरुणजी कासलीवाल की उपस्थिति में हुआ। सभी महानुभावों ने प्रदर्शनी देखकर छात्रों की बहुत प्रशंसा की।

**– जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर**

**R.N.I. No. 38278/83** ***Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20***

**तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में डी–ब्लॉक के 2 BHK की बिल्डिंग पूर्ण**




सम्पादक :
**डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह–सम्पादक :
**डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
**ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.**
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**